दलहन अनुभाग
पौध प्रजनन एवं अनुवाशिंकी विभाग
चौधरी चरण सिह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

चना उत्पादकों के लिए मासिक सलाह (फरवरी, 2016)

चना उत्पादक कृषकों के लिए फसल प्रबन्ध से संबंधित निम्न सिफारिश की जाती हैं :–

चना

सिंचाई : यदि मध्यम दर्जे की बलुई–दोमट जमीन में बिजाई से पहले भारी सिंचाई कर दी हो तो एक सिंचाई वर्षा न होने की अवस्था में टांट (फलियाँ) विकसीत होने की अवस्था पर जरूर करें ताकि दाने पतले न रहें।

निराई–गुड़ाई : पछेती बिजाई में दूसरी गुड़ाई 55–60 दिन पर करें।

कीड़ों की रोकथाम : चना

फली छेदक सूण्डी : इस कीट की सूण्डी प्रायः हरे या पीले रंग की होती है जो पत्तियों, कलियों व फलियों (टाट) पर आक्रमण करती हैं। इसकी रोकथाम के लिए 400 मि.ली. क्विनलफास 25 ई.सी. या 200 मि.ली. मोनोक्रोटोफास 36 एस. एल. या 80 मि.ली. फैनवालरेट 20 ई.सी. या 50 मि.ली. साइपरमैथरिन 25 ई.सी. या 150 मि.ली. डैकामैथरिन 2.8 ई.सी. को 100 लीटर पानी या 150 मि.ली. नोवाल्यूरोन 10 ई.सी. को 150 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

दलहन अनुभाग
पौध प्रजनन एवं अनुवाशिंकी विभाग
चौधरी चरण सिह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

दाना मटर एवं मसूर उत्पादकों के लिए मासिक सलाह (फरवरी, 2016)

दाना मटर एवं मसूर उत्पादक कृषकों के लिए फसल प्रबन्ध से संबंधित निम्न सिफारिश की जाती हैं :–

दाना मटर

सिंचाई : फलियाँ बनते समय सिंचाई करें।

मसूर :

सिंचाई : आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई करें।

निराई–गोड़ाई : देर से बोयी गयी फसल में बिजाई के 7–8 सप्ताह बाद इसकी निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाले।

कीड़ों की रोकथाम : दाना मटर व मसूर के लिए

चुरड़ा (थ्रिप) : इस कीट के शिशु व प्रौढ़ नये दाना मटर के पौधों की पत्तियों को खुरच कर निकलने वाले रस को चूसकर पौधों को हानि पहुँचाते हैं। इसके नियंत्रण के लिए 60 मि.ली. साइपरमैथरीन 25 ई.सी. को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़कें।

सुरंग बनाने वाला कीड़ा : इसकी सूण्डियाँ दाना मटर की पत्तियों में सफेद रंग की पतली–पतली सुरंग बनाकर अन्दर ही अन्दर हरे पदार्थ को खाकर हानि पहुँचाती हैं। इसके नियंत्रण के लिए 400 मि.ली. डाइमिथोएट 30 ई.सी. या 500 मि.ली. मिथाइल डिमेटान 25 ई.सी. को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़कें।